International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(6): 141-144

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(6): 141-144
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 15-09-2020
Accepted: 19-10-2020

Dr. Pragya
Ex Student, Rashtriya Sanskrit Sansthan, Janakpuri
Balahar Campus, Himachal Pradesh, India

Corresponding Author:
Dr. Pragya
Ex Student, Rashtriya Sanskrit Sansthan, Janakpuri
Balahar Campus, Himachal Pradesh, India

रामकथा साहित्य की परम्परा एवं रामायण की आदिकाव्यता

Dr. Pragya

सारांश
श्रीरामकथा अथवा रामायण को आदिकाव्य, महाकाव्यादि कहकर स्मरण किया जाता है तो उसके रचयिता को आदिकवि। आज रामकथा का जो रूप प्रचलित अथवा प्रसिद्ध है, वह रामचरितमानस है और मानस जन–जन के मन में बसा है। इसके अतिरिक्त भी भारत की लगभग हर भाषा में रामायण लिखी गई है, किन्तु सबके मूल में वही आदिकविलिखित वाल्मीकि–रामायण है। वही आदिकाव्य एवं श्रीराम का जीवन्त इतिहास है।

मूल शब्दः रामकथा, परम्परा, रामायण, आदिकाव्यता

प्रस्तावना
एक बार देवर्षि नारद वाल्मीकिजी के आश्रम पर पधारे तो किसी सन्दर्भ में वाल्मीकि ने देवर्षि से पूछा था कि इस समय धरती पर कौन सा ऐसा गुणवान्, सच्चरित्र, धर्मज्ञ, उपकार मानने वाला, सत्यव्रत, दृढ़प्रतिज्ञ, जितेन्द्रिय और प्रियदर्शन पुरुष है? जिनके क्रोधित होने पर देवता भी डर जाते हैं। उत्तर में नारदजी ने रामकथा कही जो राज्यारोहण तक समाप्त हो गई।
नारदजी के जाने के दो घड़ी बाद ही वाल्मीकि तमसा नदी के तट पर गये। नदी का कीचड़ रहित स्वच्छ जल में प्रेमालाप में लीन एक क्रौंचपक्षी के जोड़े को निहार रहे थे। तभी उन्होंने देखा कि एक बहेलिया प्रेमालाप में लीन उस क्रौंच (सारस) पक्षी के जोड़े में से नरपक्षी का वध कर दिया जिसके कारण तड़पती हुई क्रौंची (मादा) पक्षी विलाप करने लगी, जिसका युगल (नरपक्षी) वहाँ तीर से बिधा हुआ मृत पड़ा था। (कहा जाता है कि क्रौंच–हंस पक्षी रात्रि में एक साथ नहीं रहते वे केवल सन्तति के कारण ही युगलरूप में विचरते हैं)। उस क्रौंची के विलाप को सुन कर वाल्मीकि की करुणा जाग उठी और द्रवित अवस्था में उनके मुख से स्वतः ही यह श्लोक फूट पड़ा–[1]

'मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।'

वाल्मीकि दुख से कातर होकर कह तो दिया कि व्याधा को कभी शान्ति न मिले, परन्तु दुःख की अधिकता में कहे गये अपने शब्द महर्षिवाल्मीकि को स्वयं ही बेध गये और उन्हें पश्चात्ताप होने लगा कि यह मैंने क्या कह दिया? क्यों कह दिया? वे इस पर गम्भीरता से विचार करने लगे कि इसका क्या किया जाए? फिर उन्होंने अपने शिष्य भरद्वाज ऋषि से कहा कि अभी–अभी मेरे मुख से जो शब्द अनायास ही निकल गये हैं, इन्हें वीणा पर भी गाया जा सकता है। अतः इनका प्रबन्ध श्लोक (छन्द) में होना चाहिए। फिर वे अपने आश्रम लौट आये।
तत्पश्चात् कुछ समय के बाद योग का आश्रय लेकर उन धर्मात्मा महर्षि ने पूर्वकाल में जो–जो घटनाएँ हुई थीं, उन घटनाओं वहीं हाथ पर रखे आँवले की तरह स्पष्ट देखा और सारा वृत्तान्त जानने के बाद ही उन्होंने रामकथा लिखनी शुरू की। जैसे–[2]

'ततः पश्यति धर्मात्मा तत्सर्वं योगमास्थितः।
पुरा यत् तत्र निवृत्तिः पाणावामलकं यथा।।'

यह भी कहा जाता है कि जब ब्रह्मर्षि वाल्मीकि श्रीरामजी के राज्यारोहण तक की कथा लिख चुके, तब उन्होंने कुछ बटुकों को अयोध्या भेजा और रामकथा पूर्ण होने की सूचना दी। इस पर श्रीरामजी का उत्तर था कि रामकथा अभी पूरी नहीं हुई है। इन्हीं दिनों सीताजी को वनवास हो गया और वाल्मीकि की लेखनी पुनः सक्रिय हो गई। निष्कासित सीता वाल्मीकि के आश्रम में रहकर दो पुत्रों

की माता हुई। बाद में सीता के पुत्रों (लव–कुश) ने चौबीस हजार श्लोकों, पाँच सौ सर्गों, सात काण्डों वाली इस रामकथा को गाकर भरी राज्यसभा में सुनाया। वीणा बजाकर गाये जाने और ताल–लय के साथ सुन्दर सामंजस्य होने के कारण काव्य में शृंगार, करुण, हास्य, रौद्र, भयानक और वीर रसों की प्रचुरमात्रा में समावेश ने काव्य को हृदयग्राही बना दिया।

महर्षि वाल्मीकिकृत रामायण के अनन्तर रामकथा को लेकर अन्यान्य रामायणों की रचना परवर्ती काल में की गई जिनमें वाल्मीकिरामायण, योगवाशिष्ठरामायण, अध्यात्मरामायण, अद्भुतरामायण, आनन्दरामायण, भुशुण्डिरामायण, कम्बरामायण, भावार्थरामायण, कृत्तिवासरामायण, मन्त्ररामायण, श्रीरंगनाथरामायण, जैनरामायण तथा शैव रामायण प्रमुख हैं जिसमें शैव रामायण अठारहवीं, उन्नीसवीं शताब्दी की रचना मानी जाती है। जैसे–[3] 'इति श्रीशैवरामायणे पार्वतीश्वर– संवादे सहस्रग्रीवरामचरिते पुष्पिका– 12 संवत् 1956 फाल्गुन शुद्धचतुर्दश्यां लिखितम्'। संक्षेप में रामकथापरक निम्नलिखित ग्रन्थों का आख्यान वर्णित है–

1. **योगवाशिष्ठ रामायण–** महर्षि द्वारा रचित यह रामायण आर्ष–रामायण, महारामायण, वासिष्ठ–रामायण, ज्ञानवासिष्ठ और केवल वासिष्ठ के नाम से भी जानी जाती है।[4] इसमें वैराग्य, मुमुक्षु, व्यवहार, उत्पत्ति, स्थिति, उपशम तथा निर्वाण ये सात प्रकरण हैं। इसमें कुल श्लोकों की संख्या लगभग 4 हजार है, परन्तु इस रामायण का समय आज भी काल के गर्त में है।
2. **अध्यात्मरामायण–** रामानन्द द्वारा रचित यह रामायण साम्प्रदायिक रामायणों में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। अध्यात्मरामायण में सात अध्याय हैं। यह 13वीं, 14वीं शताब्दी की रचना विद्वानों द्वारा मानी जाती है।[5]
3. **अद्भुतरामायण–** अध्यात्मरामायण के अनन्तर रचित यह रामायण रामकथा में अनेक अद्भुत तत्त्वों का वर्णन करती है। इसलिये यह अद्भुतरामायण के नाम से प्रसिद्ध है। इसकी कथावस्तु तीन भागों में विभक्त है– अवतार के कारण, वाल्मीकीय रामचरित, सहस्रमुखरावणवध।[6]
4. **आनन्दरामायण–** आनन्दरामायण की रचना लगभग 15वीं शताब्दी में हुई। इसमें श्लोकों की संख्या 12 हजार 2 सौ 52 हैं। इस रामायण में 9 काण्ड हैं, जो निम्न प्रकार से हैं– सारकाण्ड (13 सर्ग), यात्र–काण्ड (9 सर्ग), विलास–काण्ड (9 सर्ग), जन्मकाण्ड (9 सर्ग), विवाहकाण्ड (9 सर्ग), राज्यकाण्ड (24 सर्ग), मनोहरकाण्ड (18 सर्ग), पूर्णकाण्ड (9 सर्ग)।[7]
5. **भुशुण्डिरामायण–** भुशुण्डि–रामायण को आदि रामायण तथा महारामायण भी कहते हैं। इस रामायण के कथानक पर पूरे भागवत की कृष्णकथा का पर्याप्त प्रभाव है।[8]
6. **कम्बरामायण–** महर्षि कम्बनकृत कम्ब–रामायण 12वीं शताब्दी की रचना मानी जाती है। कम्ब–रामायण की रचना के मंगलाचरण से यह पता चलता है कि यह शैवरामायण है।[9] इसमें वाल्मीकिकृतरामायण के प्रथम छः काण्डों की समस्त कथावस्तु स्वतन्त्ररूप में वर्णित मिलती है।
7. **भावार्थरामायण–** भावार्थरामायण सन्त एकनाथ द्वारा रचित है। इसकी रचना 16वीं शताब्दी में हुई थी। एकनाथ की इस रामायण की कथावस्तु वाल्मीकि रामायण अध्यात्मरामायण तथा आनन्द–रामायण पर आधारित है।[10]
8. **कृत्तिवासरामायण–** कृत्तिवास ओझा ने बंगाली साहित्य में प्रथम एवं सर्वाधिक लोकप्रिय रामायण की रचना 15वीं शताब्दी के अन्त में पयार छन्द में की थी।[11] कृत्तिवासीय कथानक पर शैव तथा शाक्त सम्प्रदायों की गहरी छाप है।
9. **मन्त्ररामायण–** 17वीं शताब्दी में महाभारत की टीकाकार नीलकण्ड ने ऋग्वेद के मन्त्रें के संग्रह पर अपनी नई टीका में उनका रामपरक तात्पर्य प्रदर्शित किया है।[12]
10. **श्रीरंगनाथरामायण–** श्रीरंगनाथरामायण अर्थात् द्विपदरामायण की रचना तेलगु साहित्य के ग्रन्थकार श्रीरंगनाथजी ने की। इसकी रचना 14वीं शताब्दी में हुई थी। द्विपदरामायण के छः काण्डों में वाल्मीकिरामायण के प्रथम छः काण्डों की कथावस्तु का वर्णन किया गया है।[13]
11. **जैनरामायण–** आचार्य विमलसूरिरचित प्राकृतभाषा में निबद्ध पउमचरितमहाकाव्य वाल्मीकि– रामायण के अनुसार लिखा गया है। आचार्य रविषेण ने इसका संस्कृत अनुवाद पद्मचरित (पद्मपुराण) महाकाव्य अनुदित किया है, जो प्रत्येक जैनी के घर में रामकथा का प्रतिनिधि काव्य है। यह 118 सर्गों या अध्यायों में उपनिबद्ध है। इसका रचना काल 577 ई. शताब्दी अर्थात् छठी शताब्दी का उत्तरार्द्ध माना जाता है।[14]
12. **शैवरामायण–** शैवरामायण 12 सर्गों में रचित भगवान् श्रीराम के जीवन चरित्र के उत्तरभाग का प्रतिपादन करने वाला 18वीं, 19वीं शताब्दी का एक मानक ग्रन्थ है, जिसमें राम के अश्वमेधयज्ञ से लेकर लव–कुश को राज्य देने तथा श्रीरामसीता को वैकुण्ठ में विष्णु एवं राम के रूप में पुनः मिलने की कथा वर्णित है।

रामायण के प्रमुख टीकाकारों का विवरण

महर्षि वाल्मीकिकृतरामायण सामाजिक व्यक्तियों के लिये नैतिक मानकों का मानदण्ड माना जाता है। इस महाकाव्य की प्रसिद्धि इसी से दृष्टिगोचर होती है कि इस महाकाव्य को लेकर जहाँ अनेक कवियों, लेखकों, नाटककारों ने अपनी–अपनी विधाओं में ग्रन्थ लिखें, वहीं अनेक टीकाकरों ने भी रामायण पर अपनी लेखनी उठाने से नहीं चूके।

रामायण के प्रमुख टीकाकारों में रामानुजीय टीका की रचना रामानुज ने की। वेंकट कृष्णाध्वरी की सर्वार्थसारटीका, वैद्यनाथदीक्षित की रामायणदीपिका, ईश्वरदीक्षित की बृहद्विवरण, लघुविवरण टीका, महेश्वरतीर्थ की रामायणतत्त्व–टीका, गोविन्दराज की रामायणभूषण टीका, अग्निहोत्री अहोबलकृत–वाल्मीकिहृदय–टीका, माधवयोगीकृत अमृतकतक–टीका, रामवर्मकृत रामायणतिलक–टीका, वंशीधर तथा शिवसहायकृत रामायणशिरोमणि–टीका, लोकनाथ चक्रवर्तीरचित मनोहरा–टीका, अक्बकमखीकृत धर्माकूतम–टीका, अप्पयदीक्षितकृत रामायण, तात्पर्यसंग्रह, त्रयम्बक– मखिनकृत ध्यार्माकूत–टीका, वरदराज मैथिलीभट्टकृत विवेकतिलकटीका इत्यादि वर्णित है।[15]

वाल्मीकिरामायण की उपजीव्यता–

महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में जो नैतिक मूल्यों की चर्चा की है यथा– पिता–पुत्र– वात्सल्य निरूपण, भ्रातृ–प्रेम, पति–परायणता, मातृ–भक्ति, स्वामी–सेवक सम्बन्ध, मैत्री–निरूपण, ऋषि–मुनियों का सम्मान एवं पत्नीव्रत–निरूपण। रामायण में प्राप्त इन सम्पूर्ण चीजों ने भारतीय जन–जीवन को इतना प्रभावित किया है कि अधिकांश काव्यविदों ने गौरवप्राप्ति के लिए रामायण के किसी अंश के आधार पर विविध प्रकार के काव्यों की रचना की है, जिनमें काव्य, महाकाव्य, नाटक एवं चम्पू ग्रन्थ सभी अन्वित हैं।

महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में भाषा विषयवस्तु एवं शैली का मणिकाञ्चन संयोग किया था। ठीक उसी पद्धति का अनुकरण करते हुए परवर्ती रचनाकारों ने विविध विधाओं से मण्डित रामायण की भी रचना कर डाली जिसमें अध्यात्म–रामायण, अगस्त्य–रामायण, कम्ब–रामायण, शैव–रामायण, आदि प्रमुख रामायण है।

रामायण की उपजीव्यता इसी से सिद्ध हो जाती है कि परवर्ती ग्रन्थकारों ने रामायण के कथानक को लेकर लगभग पञ्चशतक काव्यों की रचना की है एवं आज भी रामायण के आधार पर अनेकों रचनाकार महाकाव्य लिखने में लगे हुए हैं, जिनमें 20वीं, 21वीं शताब्दी के महनीय विद्वान् प्रो. राजेन्द्र मिश्र ने जहाँ जानकीजीवनम् महाकाव्य लिखा है, वहीं प्रो. सत्यव्रत शास्त्री ने रामकीर्ति–महाकाव्य लिखकर रामायण की उपजीव्यता का ही पल्लवन किया है। प्रारम्भ से लेकर आज तक रामायण के आधार पर लिखे गये ग्रन्थों को निम्नलिखित क्रम से रखा जा सकता है–

तालिका 1: ग्रन्थ तथा उनके लेखकों का उल्लेख

ग्रन्थ	लेखक	ग्रन्थ	लेखक
आदिरामायण	वाल्मीकिरामायण से पूर्व	वाल्मीकिकृतरामायण	वाल्मीकि महर्षि
कम्बरामायण	महर्षि कम्बन	अध्यात्मरामायण	रामानन्द
श्रीरंगनाथ रामायण	गोनबुद्ध रेड्डी	कण्णश रामायण	कण्णश पणिक्कर
कृत्तिवास रामायण	महर्षि कृत्तिवास ओझा	आदिरामायण	सोढ़ी मेहरबान
अध्यात्म रामायण	एषुत्तच्छन	आनन्द रामायण	नारद
मोल्ल रामायण	मोल्ल कुम्हारिन	तोखे रामायण	नरहरि
जैमिनी भारत	लक्ष्मीश	उत्कल वाल्मीकि	बलरामदास
ठिका रामायण	नीलाम्बरदास	रामरसामृतसिन्धु	कान्हुदास
गोविन्द रामायण	गुरु गोविन्द सिंह	अद्भुत रामायण	रामेश्वरदत्त
द्विपद रामायण	कट्ट वरदराजु	इरामचरित	राम
आश्चर्य रामायण	अÕयपिल्लै आशन	आश्चर्य रामायण	नित्यानन्द आचार्य
अध्यात्मरामायण पाञ्चाली	द्विज भवानीनाथ	रघुनाथ–विलास	धनञ्जय
बारमासी–कोइलि	शंकरदास	संक्षेप रामायण	मुक्तेश्वर
तत्त्वसंग्रह रामायण	राम ब्रह्मानन्द	मन्त्र रामायण	नीलकण्ठ
रामलीला	रामानन्द	अद्भुतरामायण	जगतराम राय
अंगद रायबर	फकीर रामकविभूषण	विभीषणेर रायवार	रामचन्द्र
विभीषणेर खोट्टा रायबर	रामनारायण	बिलंका रामायण	सिद्धेश्वर दास
छन्द रामायण	रघुनाथ दास	रामरसायन	रघुनन्दन गोस्वामी
रामायण	जगत मोहन राम	रामायण खुश्तर	मुंशी जगन्नाथ खुश्तर
कालनेमिर रायबार	काशीराम	अंगद रायबार	द्विज तुलसी
अंगद रायबार	हाराधन दास	जैन रामकथा	अज्ञात
रामायण	पट्टनायककृत	रामायण मंजूम	मुंशी शंकरदयाल
रामायण बहार	बांके बिहारी लाल	रामभक्तिरसामृत	कमललोचन
शैव रामायण		मेघनादवध	माइकल मधुसूदन
अगस्त्य रामायण	अगस्त्य	लोमश रामायण	लोमश
मंजुल रामायण	सुतीक्ष्ण	सौपद्म रामायण	अत्रि
सौहार्द रामायण	शरभंग	रामचरितमानस	गोस्वामी तुलसीदास
भावार्थ रामायण	संत एकनाथ	रामचन्द्र चरित्र पुराणम्	अभिनव पम्प नागचन्द्र
रामायण	चकवस्त	योगवासिष्ठ	वशिष्ठ
रामायण महामाला	अज्ञात	रामायण	मणिरत्न
सौर्व्य रामायण	अज्ञात	चान्द्र रामायण	अज्ञात
मैन्द रामायण	अज्ञात	सुब्रह्म रामायण	अज्ञात
सुवर्चस रामायण	अज्ञात	देव रामायण	अज्ञात
रावण रामायण	अज्ञात	दुरन्त रामायण	अज्ञात
रामायण काकविन	अज्ञात	स्वायम्भुव रामायण	अज्ञात
शैव रामायण	अज्ञात		

तालिका 2: रामायण पर आश्रित प्रमुख काव्य तथा महाकाव्य –

ग्रन्थ	लेखक	ग्रन्थ	लेखक	ग्रन्थ	लेखक
रघुवंश	कालिदास	सेतुबन्ध	प्रवरसेन	रावणवध	भट्टि
जानकीहरण	कुमारदास	रामचरित	अभिनन्द	दशावतारचरित	क्षेमेन्द्र
रामायणमञ्जरी	क्षेमेन्द्र	उदारराघव	साकल्यमल्ल	रामलिंगामृत	अद्वैत कवि
जानकीपरिणय	चक्रकवि	रामचरित	मोहनस्वामी	रामविजय	रघुनाथोपाध्याय
राघवोल्लास	अद्वैतसन्यासी	रघुनाथाभ्युदय	वामनभट्टबाणकृत	पउमचरिय	विमलसूरि
पदमचरित	रविषेण	राघवपाण्डवीय	धनञ्जय	राघवपाण्डवीय	माधवभट्ट

तालिका 3: रामायण पर आश्रित प्रमुख स्फुटकाव्य–

ग्रन्थ	लेखक	ग्रन्थ	लेखक	ग्रन्थ	लेखक
रामचरित	सन्ध्याकरनन्दी	राघवपाण्डवयादवीय	चिदम्बर	संकटनाशन	गंगाधर
राघवनैषधीय	हरिदत्त सूरि	रामविलास	विश्वनाथ	रामशतक	सोमेश्वर
रामार्याशतक	मुद्गल भट्ट	आर्यारामायण	कृष्णेन्द्र	रामकृष्णविलोमकाव्य	सूर्यदेव
यादवराघवीय	वेंकटाध्वरी	राघवयादवीय	अज्ञात	रामलीलामृत	कृष्णमोहन
चित्रबन्धरामायण	वेंकटेश	हंससंदेश	वेदान्तदेशिक	भ्रमरदूत	रुद्रवाचस्पति
भ्रमरसंदेश	वासुदेव	कपिदूत	अज्ञात	कोकिलसंदेश	वैंकटाचार्य
चन्द्रदूत	कृष्णचन्द्र	गीतराघव	हरिशंकर	गीतराघव	प्रभाकर
जानकीगीता	हÕर्याचार्य	रामविलास	हरिनाथ	संगीतरघुनन्दन	विश्वनाथ सिंह

तालिका 4: रामायण पर आश्रित प्रमुख नाटक ग्रन्थ–

ग्रन्थ	लेखक	ग्रन्थ	लेखक	ग्रन्थ	लेखक
उत्तररामचरितम्	भवभूति	महावीरचरितम्	भवभूति	उत्तरराघव	अनंगहर्ष मायुराज
अनर्घराघव	मुरारि	आश्चर्यचूड़ामणि	शक्तिभद्र	बालरामायण	राजशेखर
प्रसन्नराघव	जयदेव	मैथिलीकल्याणम्	हस्तिमल्ल	अञ्जनापवनाञ्जय	हस्तिमल्ल
उल्लाघराघव	सोमेश्वर	दूतागंद	सुभट्ट	उन्मत्तराघव	भास्कर
महानाटक	हनुमान्	उन्माराघव	विरूपाक्ष	रामाभ्युदय	व्यासमिश्रितदेव
जानकीपरिणय	रामभद्रदीक्षित	अद्भुतदर्पण	महादेव	अभिषेकनाटक	भास
प्रतिमानाटक	भास	कुन्दमाला	दिघ्नाग	रघुवंश	कालिदास
रघुनाथचरित	वामनभट्टबाण	आनन्दराघव	राजचूड़ामणि	रामायणमञ्जरी	क्षेमेन्द्र
रावणवध	भट्टि	जानकीपरिणय	चक्रकवि		

तालिका 5: रामायण पर आश्रित प्रमुख चम्पू ग्रन्थ–

ग्रन्थ	लेखक	ग्रन्थ	लेखक	ग्रन्थ	लेखक
रामायणचम्पू	भोज	अमोघराघवचम्पू		रामायणचम्पू	पुनम नंपूतिरि
उत्तरचम्पू	वेंकटाध्वरि	उत्तररामायण	ककटिपापराजु	गोपीनाथरामायण	अज्ञात
एकोजीरामायण	अज्ञात	तेलुगु रामायण	कूचिमंच तिम्म	रामायणचम्पू	अज्ञात
चम्पूरामायण	लक्ष्मणभट्ट	उत्तररामायणचम्पू	अज्ञात		

तालिका 6: रामायण पर आश्रित अन्य विधाओं के काव्यग्रन्थ–

ग्रन्थ	लेखक	ग्रन्थ	लेखक	ग्रन्थ	लेखक
पउमचरिय	विमलसूरि	माध्वकन्दली रामायण असमिया	अज्ञात	रामसाहित्य बंगाली	अज्ञात
रामसाहित्य उड़िया	अज्ञात	लवकुशयुद्ध	हरिहर	गीतिरामायण	दुर्गावर
अनामक जातकम्	अज्ञात	दशरथकथानकम्	अज्ञात		

दशरथकथानकम् में भी रामकथा का वर्णन मिलता है, परन्तु वहाँ रामायण की परम्परा को तोड़–मरोड़ कर प्रस्तुत किया गया है। यहाँ तक कि सीता को राम की बहन तक बता दिया गया है।

निष्कर्ष–

आदिकवि ब्रह्मर्षि वाल्मीकि ने आदिकाव्य श्रीरामायण को प्रकट कर सम्पूर्ण संसार पर जो उपकार किया है, इसके लिए तीनों लोक उनको सदा सादर नमस्कार करते हैं और करते रहेंगें। ब्रह्माजी ने उन्हें इसी श्लोक छन्द में श्रीरामकथा लिखने की प्रेरणा दी और कहा कि जब तुम कार्य प्रारम्भ करोगे तो तुम्हें राम के बारे में सब कुछ स्वयं ही पता चल जाएगा। स्वयं ब्रह्माजी का वरदान प्राप्त है कि उनके द्वारा लिखित रामायण में थोड़ी सी भी अशुद्धि नहीं होगी, प्रत्येक बात सत्य और सत्य ही होगी। जब तक इस धरती पर पर्वत और नदियाँ रहेंगी तब तक इस लोक में श्रीरामकथा का प्रचार रहेगा। जबतक आपकी लिखी हुई श्रीरामकथा का प्रचार रहेगा तब तक आपकी कीर्ति तीनों लोकों में विद्यमान रहेगी और आप मेरे लोक में निवास करेंगे। यह भी कहा जाता है कि इस ग्रन्थ का दूसरा नाम पौलस्त्यवध अथवा दशाननवध भी था।

सन्दर्भ

1. वाल्मीकिमरामायण– 1.2.15
2. वाल्मीकिमरामायण– 1.3.6
3. श्रीशैवरामायण, पार्वतीश्वरसंवाद– पुष्पिका
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास– बलदेव उपाध्याय, पृ.–46, रामकथा– कामिल बुल्के, पृ.–204
5. संस्कृत साहित्य का इतिहास– बलदेव उपाध्याय, पृ.– 48
6. रामकथा– कामिल बुल्के, पृ.– 134
7. संस्कृत साहित्य का इतिहास– बलदेव उपाध्याय, पृ.– 48
8. संस्कृत साहित्य का इतिहास– बलदेव उपाध्याय, पृ.– 49
9. रामकथा– कामिल बुल्के पृ.– 176
10. रामकथा– कामिल बुल्के, पृ.– 202
11. रामकथा– कामिल बुल्के, पृ.– 189
12. संस्कृत साहित्य का इतिहास– बलदेव उपाध्याय, पृ.– 51
13. रामकथा– कामिल बुल्के, पृ.– 178
14. संस्कृत साहित्य का इतिहास– बलदेव उपाध्याय, पृ.– 51–52
15. आधुनिक संस्कृत काव्यशास्त्र। डॉ. आनन्द श्रीवास्तव, पृ. 33–67